शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2015
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

संपादकीय

गोरक्षा सत्याग्रह: समापन से समारंभ.....

डॉ.पुष्पेन्द्र दुबे

भारत का प्राणाधार गोवंश है, परंतु जितनी उपेक्षा यहां पर गोवंश की हुई, उतनी किसी अन्य देश में नहीं। भारत ने अपने सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक और आर्थिक विकास के केंद्र में सदैव गोवंष को रखा, परंतु विकास के आधुनिक माडल ने गोवंश को सभी जगह से बेदखल कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि गोवंश के प्रति पूज्य भाव धीरे-धीरे क्षीण होकर वह पशुवत रह गया और उसे मनुष्य की क्षुधा पूर्ति का साधन माना जाने लगा। इस देष में किसी उम्र के गोवंष का कत्ल केंद्रीय कानून से बंद हो और भारत से मांस निर्यात पर रोक लगाई जाए, ऐसी ललक कुछ लोगों में जाग्रत हुई और उन्होंने इसके लिए प्राणपण से प्रयास किए। आर्य समाज के संस्थापक स्वमी दयानंद सरस्वती से लेकर संत विनोबा भावे तक न जाने कितने ज्ञात-अज्ञात सत्पुरुषों ने गोवंश रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी लगाई। संत विनोबा के आदेश से मात्र अठारह सत्याग्रहियों से देवनार कत्लखाने के सामने सत्याग्रह प्रारंभ हुआ। इसका संयोजक अच्युत काका को बनाया गया। विनोबा ने उन्हें आदेश ही दिया था और कहा था 'करना, हटना नहीं।' इसका अच्युत काका ने अक्षरषः पालन किया। वे अंगद के पैर की तरह सत्याग्रह के लिए डटे रहे। अच्युत काका ने मृत्युपर्यंत गाय का ही चिंतन किया। मूलभूत प्रश्नों को अहिंसक तरीके से हल करने के लिए एकाग्रता के सिवा और कोई रास्ता नहीं है, यह काका ने अपने कर्तृत्व से दिखाया। इन तैंतीस वर्षों में न जाने कितने आंदोलन हुए, कितनी ही सरकारें बदलीं, सत्याग्रहियों पर हमले भी हुए, बावजूद इसके सत्याग्रह अपने मार्ग पर अटल रहा। इसका मुख्य कारण यही है कि यह सत्याग्रह अहिंसक, असांप्रदायिक और अराजनैतिक विचार की मजबूत बुनियाद पर टिका रहा। गोरक्षा सत्याग्रह में से रचनात्मक कार्य करने के लिए गोविज्ञान भारती का उदय हुआ। इसके माध्यम से गोवंश को वैज्ञानिक और आर्थिक स्तर पर पुनप्रतिष्ठित करने के लिए अनेक प्रकल्प, संगोष्ठियां, प्रचार अभियान चलाए गए। विनोबा ने 'दिलों को जोड़ना' अपना जीवन कार्य माना, गोरक्षा सत्याग्रह उसी की अंतिम परिणति थी। महाराष्ट्र सरकार ने गोवंश हत्याबंदी कानून पारित किया है। इससे महाराष्ट्र में गोवंश हत्या पर रोक लग गई है। गोवंश हत्याबंदी हेतु देवनार कत्लखाने के सामने किया जा रहा सत्याग्रह का एक संकल्प पूरा हुआ। अभी पूरे देश के लिए केंद्रीय कानून बनना शेष है। इसलिए दिल्ली में मोर्चा जमाने की आवश्यकता है। अच्युत काका की दृष्टि में यह सत्याग्रह 'एसिड टेस्ट' है। महाराष्ट्र में कानून बनने के साथ ही पूरे देश का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है। काका लिखते हैं कि हम आशा और प्रार्थना करें कि उनमें यह अक्ल और हिम्मत जगेगी जिससे कि वे इस चुनौती को स्वीकार कर सही हल ढूंढने की कोशिश करेंगे। किसी भी उम्र के गाय-बैल न कटें, ऐसे संपूर्ण प्रतिबंध की शुरुआत ही वैसी कोशिश की 'एसिड टेस्ट', असली कसौटी है।'